International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
January-February-2019 Volume 6, Issue-1
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

पाप और पुण्य को परिभाषित करता उपन्यास चित्रलेखा के पात्र

डॉ.निशा रम्पाल,
हिन्दी विभाग,
गुजरात विश्वविद्यालय,अहमदाबाद

'चित्रलेखा' के लेखक ने उद्देश्य-विशेय को दृष्टि में रखकर न केवल कथानक-योजना की है; अपितु पात्रों का चयन तथा उनका चरित्र-विकास भी किया है। इसी कारण समस्या के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के लिए दृष्टिकोण-विशेष का समर्थन करने वाले पात्रों की सृष्टि की गई है। नियतिवादी उपन्यासकार थामस हार्डी के 'पात्रों के समान ' 1.ये भी लेखक के जीवन-दर्शन से प्रभावित हैं। समस्या को आधार बनाकर चलने के कारण लेखक ने उनके सम्पूर्ण क्रिया-कलाप को न प्रस्तुत करके उपन्यास को अनावश्यक विस्तार से बचा लिया है। अधिकांश पात्रों को पूर्वनिर्धारित दिशा में इस प्रकार मोड़ा गया है कि 'समस्या के सभी पहलू उजागर होते चले जाएं। उन्हें स्वतन्त्र रूप से विकसित होने का अधिक अवसर नहीं दिया गया। आलोचकों ने माना है कि लेखक के परिस्थिति-दर्शन से प्रभावित होने के कारण ये पात्र 'रूपाकार-हीन' हो गए है;2 अथवा 'व्यक्तिवाद के दुरुपयोग का साधन बनकर वे सर्वथा अपना व्यक्तित्व खो बैठे हैं।3

लेखक को पाप-पुण्य की समस्या का समाहार मनःप्रवृत्ति एवं परिस्थितिजन्य विवशता तथा दृष्टिकोण की विषमता के रूप में प्रस्तुत करना था। इस समाधान तक पहुंचने के लिए उसने परस्पर विरोधी प्रवत्ति वाले दो सबल पात्रों बीजगुप्त एक कुमारगिरि का चुनाव किया। इन पात्रों के चरित्र की संपूर्ण व्यञ्जना के उद्दे श्य रावतंकी चित्रलेखा की रचना की गई। चित्रलेखा, बीजगुप्त और कुमारगिरि की कथा को पुष्ट एवं गतिमान करने के लिए मृत्युंजय, श्वेतांक तथा यशोधरा को लिया गया। चूंकि समस्या की प्रस्तुति ऐतिहासिक वातावरण में की गई है, अतः उस वातावरण की सृष्टि के लिए चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य- दो पात्रों का चुनाव किया गया। समस्या को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करने एवं लेखकीय-मंतव्य की उद्घोषणा करने के लिए महा-प्रभु रत्नांवर की सृष्टि हुई । गौण-पात्रों में से मधुपाल एवं विशालदेव की अवतारणा अनावश्यक प्रतीत होती है। कथानक में इसकी उपयोगिता नहीं है। मधुपाल को कुमारगिरि के ज्ञान से अभिभूत होते अथवा 'संसार की वास्तविक गति' से सम्बन्धित शंका का समाधान करते दिखाया गया है। यह कार्य किसी अन्य पात्र से भी करवाया जा सकता था। इसके अतिरिक्त विशालदेव के द्वारा यदि लेखक अपनी पूर्व-निश्चित धारणा को ही व्यक्त कराना चाहता था तो उसके चरित्र को निष्प्राण बनाने के स्थान पर श्वेतांक को ही कुमारगिरि के जीवन के निरीक्षण का अधिक अवसर देकर, उसी से यह कार्य कराया जा सकता था

समस्या केन्द्रित उपन्यासों के पात्र प्रतीक बनकर प्रायः जीवंतता खो देते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में भी पाप-पुण्य के विरोध को लेकर निर्मित किए गये पात्रों में प्रतीकात्मकता आने की सम्भावना थी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। प्रतीक होने का आभास कराते हुए भी ये वास्तविक पात्र है। प्रारम्भ का भोगी बीजगुप्त, अन्त के भोगी बीज-गुप्त से नितांत भिन्न है। इसी प्रकार आरंभ का ममत्व को वशीभूत करने वाला योगी, अन्त के योगी से भिन्नता रखता है। जैसा कि वर्माजी की नियतिवादी विचारधारा का विवेचन करते हुए कहा जा चुका है कि उनके द्वारा प्रस्तुत समस्या का समाधान अपने आप में विरोधाभास लिए हुए है; उसका परिणाम पात्रों को भी भुगतना पड़ा है। एक ओर लेखक ने उनके कार्यों को मनःप्रवृत्ति के अनुकूल माना है तो दूसरी ओर परिस्थितिजन्य विवशता का परिणाम। अतः पात्रों का चरित्रांकन भी उसी के अनुरूप किया गया है।एक ओर ये परिस्थितियों के समक्ष झुकते हैं, इनके जीवन के उतार-चढ़ाव का निर्देशन परिस्थितियों से होता है- दूसरी ओर इनका दृढ़-मनोबल इनके चरित्रों को ऊचा उठा देता है। जहां ये परिस्थितियों के आघात से विचलित होते हैं, वहां इनका अस्थिर व्यक्तित्व इन्हें गतिशील-पात्र मानने का भ्रम उत्पन्न करता है; किन्तु ज्यों ही इनका आन्तरिक द्वन्द्व इन्हें पूर्ववत् स्थिति में लौटा लाता है, वहां ये स्थिर-पात्र प्रतीत होते हैं। अतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन पात्रों को स्थिर अथवा गतिशील में से किस कोटि के अन्तर्गत रखा जाए। निराकार की उपासना करने वाला योगी 'साकार' पुकारने लगता है। 4चित्रलेखा का अनन्य उपासक बीजगुप्त भी परिस्थितियों से प्रताड़ित होकर यशोधरा के विषय में अपनी दुर्वलता का परिचय देता है; किन्तु उसका दृढ़-मनोबल उसे पुनः पूर्ववत स्थितियों

में ले आता है। वह अपनी आत्मशक्ति के बल पर अपनी दुर्बलता पर विजय पाकर ऊंचा उठने में समर्थ होता है। सर्वस्व त्याग के क्षण वह चित्रलेखा का धन वैभव ठुकरा देता है, किन्तु चित्रलेखा को स्वीकार कर पुनः भोगी होने का परिचय भी देता है। संसार में केवल एक मनुष्य बीजगुप्त से प्रेम करने वाली नर्तकी भी पुनः बीजगुप्त के पास लौट आती है।पात्रों में आए उपयुक्त परिवर्तन सदैव उनकी मनःप्रवृत्ति का परिणाम हों, ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए यदि चित्रलेखा कुटी में न पहुंचती तो संभवतः कुमारगिरि पतन की ओर उन्मुख न होता । "जाओ नर्तकी। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं । तुमने मुझे गिराया और तुम मुझे उठा भी रही हो"5 कुमारगिरि का यह कथन उसके पुनः साधना में रत होने का संकेत अवश्य देता है; किन्तु यदि चित्रलेखा कुटी में ही रह जाती तो क्या कुमारगिरि संयमित रह पाता ? और यदि चित्रलेखा को बीजगुप्त के त्याग की सूचना न मिलती तो क्या वह बीजगुप्त के पास लौटती ? कुमारगिरि के छल का आभास न होने पर उसे अपनी भूल का एहसास होना असम्भव था। बीजगुप्त के पास रहने का अवसर न मिलने पर सीधे-सादे श्वेतांक का भी कुशल प्रेमी बन जाना सम्भव न था। यहां पात्रों में आए ये परिवर्तन परिस्थितियों का परिणाम प्रतीत होते हैं, मनः प्रवृत्ति का नहीं। उनके इन कार्यों के विषय में उत्पन्न परिस्थिति एवं प्रवृत्ति विषयक सन्देह ही उनकी मध्यवर्ती स्थिति के लिए उत्तरदायी है। न तो वे पूर्णतया स्थिर-पात्र प्रतीत होते हैं न पूर्णरूप से गतिशील इसीलिए आलोचक अपनी-अपनी दृष्टि से इन्हें भिन्न-भिन्न वर्गों में रखते हैं। कुछ इन्हें अथ से इति तक एक ही प्रकार का मानते हैं, कुछ इन्हें गतिशील पात्र कहते हैं तो कुछ इनकी मध्यवर्ती-स्थिति में विश्वास करते हैं। कई आलोचकों को 'चित्रलेखा' को चरित्र-प्रधान उपन्यास मानने का भ्रम हुआ है। चरित्र-प्रधान उपन्यासों में चरित्र सुसम्बद्ध कथानक के अभिन्न अंग नहीं होते। आन्तरिक विकास के फलस्वरूप हुई हो। पात्रों का चरित्र-चित्रण करना ही उपन्यासकार का लक्ष्य होता है। किन्तु 'चित्रलेखा' का कथानक सुगठित है। इसके पात्र तथा घटनाएं आपस में इस भांति सुसम्बद्ध है कि महत्त्वपूर्ण स्थितियों और संघर्षों के बीच चित्रित करने से ही पात्रों की चारित्रिक-विशेषताओं का उद्‌घाटन होता है। सभी घटनाएं पात्रों की वशतिनी नहीं है, अपितु उनका चयन एवं संयोजन समस्या को ध्यान में रखकर किया गया है। समस्या को ध्यान में रखते हुए लेखक ने इन पात्रों का संचालन अपनी इच्छानुसार किया है, किन्तु लेखक की विचारधारा से प्रभावित होते हुए हुए भी ये पात्र विशिष्ट व्यक्तित्व रखते हैं। बीजगुप्त एवं कुमारगिरि को प्रतीक पात्रों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है, किन्तु ये व्यक्ति पात्र जान पड़ते हैं तथा गति-शील प्रतीत होते हैं। बीजगुप्त ही परिस्थितिजन्य विषशता को स्वीकार करते-करते परिस्थितियों से संघर्ष कर आत्मशक्ति का परिचय देने का उपदेश दे बैठता है। जबकि चरित्र-प्रधान उपन्यासों में चरित्रों का कोई गुणात्मक परिवर्तन सामने नहीं आता। यह स्पष्ट है कि चरित्र-चित्रण करना वर्मा जी का उद्देश्य नहीं है क्योंकि चरित्रों के मार्मिक-पक्षों के उद्‌घाटन की प्रवृत्ति भी प्रायः नहीं दीख पड़ती। चित्रलेखा के चरित्र का जो मार्मिक, करुण एवं प्रभावोत्पादक पक्ष हो सकता था, वह उसका नर्तकी बनने से पूर्व का जीवन था, परन्तु केवल एक पृष्ठ में उस सम्पूर्ण जीवन का चित्रण कर लेखक आगे बढ़ गया है। स्पष्ट है कि चरित्र की विभिन्न भाव-भंगिमाओं पर प्रकाश डालना लेखक को इष्ट नहीं है। 6 'चित्रलेखा' चरित्र-प्रधान उपन्यास नहीं है। पाठक पात्रों के जिस स्वरूप से उपन्यास के प्रारम्भ में परिचित था, उपन्यास के अन्त में वह उससे भिन्न प्रतीति करता है। भले ही भोगी बीजगुप्त के फिर से भोगी होने तथा योगी कुमारगिरि के पुनः योगी होने का आभास हुआ हो, इस आधार पर उनके चरित्रों को स्थिर कदापि नहीं कहा जा सकता। भोगी पुनः भोगी होने से पूर्व अपूर्व त्याग का परिचय देता है तथा योगी पुनः योगी होने से पूर्व वासना के गर्त में गिरता है। लेखक द्वारा प्रस्तुत निष्कर्ष भी भोगी का उत्थान एवं योगी का पतन है। उपन्यास में प्रस्तुत यौन-पवित्रता आदि प्रश्नों को भी सामाजिक स्तर तक नहीं अपितु मनोवैज्ञा-निक-स्तर तक उठाया गया है। इस कारण पात्र वर्ग नहीं बनते। वे निजतावादी-पात्र ही प्रतीत होते हैं। केवल उनकी प्रस्तुति इस भांति की गई है कि वे वर्ग-प्रतिनिधि जान पड़े। इसे एक प्रकार का शिल्प कहा जा सकता है। लेखक के व्यक्तिवादी-दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने के कारण भले ही कहीं-कहीं इनका व्यक्तित्व स्वतन्त्र प्रतीत नहीं होता, किन्तु स्थिर-पात्रों का आभास कराते हुए भी ये गतिशील ही अधिक जान पड़ते हैं।समस्या के अनुरूप. चुने गए ये पात्र चिन्तनशील हैं; जो अपना निश्री-वृष्टिकोण रखते हैं तथा बाद-विवाद द्वारा एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए समस्या के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं। रत्नोबर ज्ञानोपदेशक गुरु है। उन्ही का मत है कि कुमार-गिरि में ज्ञान एवं कल्पना है तथा उसके साथ रहकर मनुष्य जीवन की जटिल समस्याओं को सफलतापूर्वक हल कर सकेगा'। कुमारगिरि के अखंड-ज्ञान पर मधुपाल को भी गर्व है। वह स्वयं एक जिज्ञासु शिष्य है। श्वेतांक ने भी पच्चीस वर्ष की अवस्था में हीं दर्शनों एवं स्मृतियों का अध्ययन कर लिया है। विशालदेव ब्राह्मण है, ध्यान एवं आराधना पर जिसकी अनुरक्ति है। चित्रलेखा विदुषी है तथा बीजगुप्त विद्वान है। ये पात्र विशिष्ट दृष्टिकोण

रखते हैं, यथा- कुमारगिरि को संसार से विरक्ति है। संयम ही उसका साधन है तथा स्वर्ग उसका लक्ष्य । बीजगुप्त भोगी है- स्वर्ग तथा नरक की उसे कोई चिन्ता नहीं आमोद और प्रमोद ही उसके जीवन का 'साधन' है तथा 'लक्ष्य' भी। एक नारी को अन्धकार मानता हुआ इच्छाओं के हनन को प्रमुखता देता है तो दूसरा भूत-भविष्य को कल्पना की चीजें मानता हुआ। वर्तमान के सम्पूर्ण उपभोग में विश्वास रखता है। इधर चित्रलेखा के लिए जीवन एक अविकल पिपासा है तथा उल्लास-विलास ही संसार का सारा सुख है। लेखक ने विशिष्ट दृष्टि-कोण वाले इन पात्रों का चुनाव उपन्यास के अन्त में पाप-पुण्य को 'दृष्टिकोण की विषमता'7 के रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया है।रत्नांबर केवल आरम्भ और अन्त की सूचना प्रदान करते हैं, अतः इन्हें चरित्र-विकास की दृष्टि से देखना व्यर्थ है। प्रारम्भ में विशाल देव जिज्ञासु शिष्य की भांति चित्रित किया गया है, किन्तु कुमारगिरि जैसे गुरु के पास रहकर उसके चरित्र-विकास की कोई संभावना नहीं रह जाती। उपन्यास के अन्त में वह जिस प्रकार कुमारगिरि के विषय में अपना मत प्रस्तुत करता है, उससे तो संदेह होता है कि उसने शास्त्रों का अध्ययन भी किया है अथवा नहीं। दूसरी ओर बीजगुप्त के साथ रहने पर श्वेतांक को चरित्र-विकास के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि प्रारम्भ में वह सरल भोले-भोले आज्ञाकारी सेवक की भांति चित्रित किया गया है। अन्त में वही एक कुशल प्रेमी के रूप में सामने आता है। कुमारगिरि का शिष्य मधुपाल केवल द्वितीय परिच्छेद में कुमारगिरि से प्रश्न पूछता दिखाई देता है। उसके उपरांत वह संपूर्ण उपन्यास में कहीं नहीं दीखता । यशोधरा का चरित्र समतल है। उसके माध्यम से लेखक आदर्श भारतीय कन्या की प्रतिमूर्ति उपस्थित करना चाहता है जो पित्राज्ञा को सर्वोपरि जानती है। वह जानती है कि श्वेतांक उससे प्रेम करता है तथा उसके पिता उसका विवाह बीजगुप्त के साथ करना चाहते हैं किन्तु वह दोनों के साथ रहती हुई, किसी भी स्थति में किसी के प्रति आसक्ति का कोई भाव प्रकट नहीं करती। उसे उपन्यास का लेखनीय स्थिर पात्र कहा जा सकता है। मृत्युंजय, चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त भी गौण पात्र है, जिनके चरित्र को उभरने का विशेष अवसर प्राप्त नहीं हुजा। इन गौण पात्रों को कथानक को आगे बढ़ाने तथा समस्या को उभारकर सामने लाने का अवसर प्रदान करने के लिए ही लाया गया है, अतः इनका विस्तृत अध्ययन अपेक्षित नहीं। मुख्य रात्री इसे नायिका चित्रलेखा का चरित्र अत्यन्त उलझा हुआ है। उसमें इतने अन्तद्वन्द्व है कि जैसे विवण में जटिलता आ गई है। कुमारगिरि को उपन्यास के नायक का स्थान प्राप्त नहीं हो सका, किन्तु बह इतना महत्त्वपूर्ण पात्र है जिसके अभाव में समस्या की सम्यक प्रस्तुति असम्भव थी-योग एवं भोग का द्वन्द्व प्रदर्शित करना तथा अस्वाभाविक हो इसकिए गए इन्द्रिय-दमन को अनुचित ठहराना कठिन था। इस योगी के योग की बलि देकर ही लेखक समस्या का प्रतिपादन प्रभावशाली ढंग से कर पाया है। पात्रों में परस्पर विरोधी तत्त्वों का समावेश योग और भोग का द्वन्द्व प्रशित करने के लिए किया गया है। चित्रलेखा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। विधवा होने के पश्चात् संयम से जीवन व्यतीत करने का निश्चय करके भी 'संसार में केवल एक मनुष्य' वीजगुप्त से प्रेम करना, साथ ही कुमारगिरि को चाहना, चित्रलेखा के चरित्र की जटिलताओं के उदाहरण हैं। ये पात्र प्रारम्भ से अन्त तक एक से नहीं बने रहते । जब तक इनके द्वारा किए गए कार्य इनकी पहचान नहीं करा देते, इनका व्यक्तित्व पूर्ण रूप से सामने नहीं आता। उपन्यास के पात्रों का आंतरिक एवं बाह्य चित्रण प्रस्तुत करने के लिए विश्लेषणा-त्मक, विवरणात्मक, संकेतात्मक, अभिनयात्मत्क, संवादात्मक, निराधार-प्रत्यक्षीकरण तथा तुलनात्मक आदि विधियों का प्रयोग किया गया है। लेखक आवश्यकतानुसार कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं नाटकीय विधि का प्रयोग करता चला है। पात्रों का बाह्य-चित्रण उनके नामों एवं अनुभावों द्वारा किया गया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही चारित्रिक-विशेषताओं के आधार पर पात्रों का नामकरण कर दिया गया है। हालांकि वे आगे चलकर एक नई दिशा भी पकड़ लेते हैं। "आरम्भ का योगी कुमारगिरि, जो कौमार्य में गिरि के समान उन्नत और अडिग था, बाद में वासना का गुलाम बन जाता है। बीजगुप्त जो पहले बीज प्रकृति का उपासक था, आमोद-प्रमोद ही जिसके जीवन का लक्ष्य था वाद में भोगी से योगी हो जाता है। श्वेतांक भी जिसका हृदय उपन्यास के आरम्भ में एक ऐसी साफ-सुथरी स्लेट के समान था जिस पर अभी कोई संस्कार रूपी अक्षर नहीं बने थे, यदि थे भी तो केवल श्वेत अंक ही वही अनाड़ी उपन्यास के समाप्त होते-होते एक सफल प्रेमी के रूप में परिणत जाता है।"8

प्रमुख पात्रों में से बीजगुप्त एवं कुमारगिरि का परिचय 'उपक्रमणिका' में दे दिया गया है, जिसके लिए श्वेतांक की जिज्ञासा को आधार बनाया गया है। व रत्नांबर एवं विशालदेव को समस्या के उपस्थापन हेतु लाया गया है। यशो एवं मृत्युंजय आदि शेष पात्रों को लेखक तब सामने लाया है, जब उपन्यास आठ परिच्छेदों की यात्रा तय कर चुका है। पात्रों को आवश्यकता होने पर ही परिचित कराना लेखक की कुशलता का परिचायक है।कहीं-कहीं पात्रों का परिचय अनावश्यक रूप से भी दिया गया है जो उनका चरित्रोद्घाटन भली-भांति न कर पाने के कारण नीरस प्रतीत होता है।

उपक्रमणिका में ही रत्नांबर के माध्यम से कुमारगिरि का परिचय दिया जा चुका है, किन्तु लेखक दूसरे ही परिच्छेद में शब्दों के फेर से करीब सवा-पृष्ठ का विवरण देकर कुमारगिरि का वही परिचय दोहरा देता है। मृत्यु जय, यशोधरा एवं चित्रलेखा का प्रथम परिचय भी वर्णनात्मक-विधि से दिया गया है। प्रमुख पात्रों के सौन्दर्य की चर्चा करते हुए लेखक ने उनके रूप-वर्णन में रुचि नहीं ली। कुमारगिरि द्वारा यशोधरा एवं चित्रलेखा की तुलना कराते हुए इस अवसर का उपयोग किया जा सकता था, किन्तु लेखक एक को केवल 'जीवन की हल-चल' तथा दूसरी को 'मृत्यु की शान्ति' कहकर रह जाता है। हां, बीजगुप्त एक स्थान पर यशोधरा की 'प्रशांत' तथा 'सुधा-सिचित आंखें- उसके लज्जा और तेज से विभूषित अति सुन्दर मुख-मण्डल का संकेत अवश्य देता है, किन्तु उपर्युक्त विवरण पाठक के मन में यशोधरा नाम की किसी स्त्री. विशेष की छवि अंकित कर पाने में असमर्थ है। चित्रलेखा के सौंदयांकन के स्थान पर लेखक ने उसे 'पाटलिपुत्र की असाधारण सुन्दर नर्तकी' 'साक्षात् लक्ष्मी' तथा उसके मुख को 'पूणिमा के चन्द्रमा की भांति' आदि कहकर काम चला लिया है।

पात्रों की वेशभूषा का वर्णन करते हुए राजसभा में नृत्य के लिए उपस्थित चित्रलेखा की आकर्षक पोशाक का वर्णन किया गया है- "स्वर्ण तारों का लहंगा वह पहने हुए थी.. रत्नजटित आभूषणों से वह लदी थी...।"9मुखाकृति के चित्रण की ओर विशेष रुचि न होने पर भी पात्रों की मुख-मुद्राओं, मुखांकित-भावों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है। पात्रों के मुखांकित-भाव उनके चरित्र के विषय में वह सब कह जाते हैं जिन्हें वे प्रकट रूप से कभी न कह पाते। मनोवृत्तियों के अनुरूप ही इनकी मुख-मुद्राएं परिवर्तित होती रहती हैं, अतः उनकी मनोदशा समझने की कुंजी के रूप में इनका प्रयोग किया जा सकता है। उपन्यास के पात्र भी दूसरे के मुखांकित भावों को पढ़कर रहस्य समझ लेने में दक्ष हैं। बीजगुप्त समस्याओं के आरपार देख लेने में समर्थ है। वह चित्रलेखा एवं कुमारगिरि के वाद-विवाद के मध्य ही दोनों के एक दूसरे की ओर आकर्षित होने का आभास पा जाता है। श्वेतांक की मुख-मुद्राओं तथा संकेतों द्वारा वह उसके भावों एवं विचारों को समझ पाने में भी समर्थ है। यशोधरा एवं श्वेतांक का एकटक एक दूसरे की ओर देखना बीजगुप्त को उनके मनोभावों से परिचित करा देने के लिए पर्याप्त है। काशीगमन के कार्यक्रम में श्वेतांक की अरुचि देखकर वह जान जाता है कि श्वेतांक 'प्रेम करने को उत्सुक है।' सम्भवतः वह यशोधरा को अपना भी लेता, यदि उसे 'श्वेतांक की मुषाकित भावनाओं ने सावधान न कर दिया होता ।'चित्रलेखा भी भाव पड़ने में कुशल है। श्वेतांक को उसके 'मुखांकित भावों का अध्ययन' करने के लिए भेजा जाता है; चित्रलेखा उसके मुख से जान जाती है कि बह उसके पास क्यों आया है। वह श्वेतांक की मुख-मुद्रा से पहचान लेती है कि प्रताड़ित किए जाने के बावजूद वह चित्रलेखा के प्रति अनुराग रखता है। इस बात का अनुचित लाभ उठाकर वह उसे शराब पिलाकर अपने भेद को गुप्त रखने के लिए कहती है।

श्वेतांक न मनोभाव छिपाना जानता है, न पढ़ना। चित्रलेखा के 'उल्लास से चमकते मुख के पीले पड़ जाने' का वह कोई अर्थ नहीं निकाल पाता । यशोधरा भी मनोभावों का अध्ययन कर पाने में समर्थ है ।चित्रलेखा भाव छिपाने से भी अत्यन्त कुशल है। वह अपने स्टेट्स के प्रति इतनी जागरुक है कि अपने उस स्वाभाविक आचरण को भी बलपूर्वक दवा लेती है जो उपस्थित जनसमुदाय की दृष्टि से वांछित न हो। मृत्युंजय के यहां स्त्रियों द्वारा व्यंग्य किए जाने पर वह क्रोधित हो जाती है, किन्तु बीजगुप्त के पूछने पर "कुछ नहीं, आपस में हंसी हो रही थी" कहकर हंस देती है। इससे पूर्व बीजगुप्त को अपने प्रेम का विश्वास दिलाने के लिए "प्रियतम, कुमारगिरि मूर्ख है" कहकर कुमारगिरि के प्रति अपने आकर्षण को छिपा जाती है। बीजगुप्त को उसी प्रकार का घोखा वह "ठीक कहते हो, मैं भ्रम के आवरण में थी" 10कहते हुए देती है। बीजगुप्त द्वारा अनने यहां कई दिनों से न आने का कारण पूछे जाने पर भी वह अपने क्रोध को दवा लेती है। यही चित्रलेखा जब उपन्यास के अन्त में बीजगुप्त के समक्ष अपने को अपराधिनी घोषित करते हुए, उसे अपना शरीर छूने से मना करती है तो पाठक उसके चरित्र के कृत्रिम आवरण के भीतर छिपे उसके यथार्थ रूप से पहली बार पंरिचित होता है। चरित्र-चित्रण की यही पद्धति अधिक स्वाभाविक, तर्क-संगत एवं उपयुक्त समझी जाती है। सबसे पहले अन्तर्द्वन्द्व का आरम्भ चित्रलेखा में होता है। इसकी उत्पत्ति श्रीजगुप्त से प्रेम करते हुए, कुमारगिरि की ओर आकषित हो जाने पर होती है। यही अन्य पात्रों में भी मानसिक उद्विग्नता उत्पन्न करता है। चित्रलेखा के इस अन्तर्द्वन्द्व का चिषण करते हुए लेखक ने सवा दो पृष्ठ तक चित्रलेखा के जीवन का पूर्ववृत्त प्रस्तुत किया है। यह पाठक को उसकी प्रेम विषयक धारणा में आए परिवर्तनों से परिचित कराकर उसकी दुविधा की सूचना इस प्रकार देता है "चित्रलेखा कुमारगिरि से प्रेम करने लग गई इस बार अपने प्रेम के आधार बीजगुप्त के उपस्थित रहते हुए, इसलिए चित्रलेखा को कुमारगिरि के पास जाने का साहस न हुआ था।"। किन्तु इस स्थिति से उत्पन्न

मानसिक-द्वन्द्व का चित्रण न करके, लेखक सीधे ही चित्रलेखा के निश्चय तक पहुंचने के कारण से परिचित करा देता है- "मृत्यु'जय के भवन की बात ने उसे साहस दिया ।"10 वह केवल अपने विगत-जीवन के बारे में सोचती हुई एक ही क्षण में समाधान तक पहुंच जाती है, बिना किसी प्रकार की दुविधा में पड़े हुए। इसी भांति अन्य स्थलों पर भी संघर्ष का चित्रण करते हुए लेखक दो वस्तुओं अथवा सिद्धान्तों में पात्रों का समान झुकाव अधिक समय तक दिखा पाने में अधिक सफल नहीं हुआ; वह अनिश्चितता की स्थिति का चित्रण प्रायः अधिक देर तक नहीं कर पाया ।कुमारगिरि, विशालदेव को चित्रलेखा के लिए कूटीया तैयार करने के लिए कहते हैं, किन्तु विशालदेव के यह पूछने पर "कुटी आज रात तक तैयार कर देनी होगी ?" कुमारगिरि के शरीर में क्रोध की विद्युत-सी प्रवाहित होती है और वे तुरन्त निर्णय कर लेते हैं कि वे चित्रलेखा को अपनी कुटी में ही रखेंगे। यहां लेखक ने कुमार-गिरि के अन्तद्वन्द्व की सांकेतिक अभिव्यंजना अत्यन्त कुशलतापूर्वक की है। विशाल-देव इससे पूर्व भी उनकी निर्बलता को एक-बार देख चुका हैं, "अब कुमारगिरि इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर उसे दिखाना चाहते है कि 'वे गुरु हैं' और विशालदेव से ऊंचे हैं।'कुमारगिरि के उस अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण भी अत्यन्त सजीव बन पड़ा है जहां वे निश्चय नहीं कर पाते कि चित्रलेखा अथवा योग, दोनों में से किसे चुनें ? यहां लेखक अनिश्चितता की स्थिति भी देर तक बनाए रख सका है।चित्रलेखा द्वारा प्रताड़ित श्वेतांक का आत्मग्लानि का प्रसंग तथा यशोधरा की प्राप्ति के लिए उसका द्वन्द्व भी मार्मिक है। वह दोहरी कर्तव्य-भावना से युक्त है। वह बीजगुप्त का सेवक भी है तथा उसका गुरु भाई भी; साथ ही यशोधरा से प्रेम करने के कारण प्रतिद्वन्द्वी भी। वह चित्रलेखा का सेवक है और उससे प्रेम भी करता है - ऐसी स्थिति में उसका तनाव-ग्रस्त रहना स्वाभाविक ही है।कुछेक अन्तर्द्वन्द्व इस प्रकार चित्रित किए गए हैं जिनसे पाठक पात्र के मन का सीधा साक्षात्कार कर पाए। राजसभा में चित्रलेखा से पराजित होने पर कुमार का अन्तःसंघर्ष तथा श्वेतांक के हित के लिए यशोधरा से विवाह करने का निश्चय स्थापने से पूर्व बोत्रगुप्त के दृश्य में उपागमन संघर्ष इस दृष्टि से उल्लेखनीय है इनका चित्रण अत्यन्त विस्तृत रूप में किया गया है। विश्या कही तीन-चार पंक्तियों तक ही सीमित अन्तर्द्वन्द्वों के उदाहरण भी मिलते हैं। कहीं केवल इनकी सूचना देकर लेखक आगे बढ़ गया है यथा- 'श्वेतांक को छोड़ कर कोई कुछ न सोच रहा था', चित्रलेखा रात भर बुरे-बुरे स्वप्न देखती रही आदि दो एका स्वतों पर ये अन्तद्वन्द्व नाटकीय-स्वगत-कथन की सी शैली का आभास कराते हैं।11

इन अन्तर्द्वन्द्वों के माध्यम से लेखक ने पात्रों के मनोविज्ञान को अत्यन्त कौशल के साथ समझकर चित्रित किया है। डा० गणेशन इन पात्रों के मानसिक-पक्ष के चित्रण को सुन्दर मानकर भी किसी पात्र में द्वन्द्वात्मक विकारों या विचारों का क्रमिक विकास नहीं पाते, इस कारण वे उपन्यास को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखना व्यर्थ समझते हैं। किन्तु वर्मा जी के चरित्र-चित्रण में मनोविश्लेषण की गहराई भले ही न हो, पर इसका स्थूल स्तर अवश्य दिखाई देता है। पात्रों के चेतन एवं अवचेतन, दोनों मन के द्वन्द्व को स्पष्ट करके मानव मन की व्याख्या की गई है। कुमारगिरि चित्रलेखा को दीक्षा देने से डरता है, कहीं 'वह स्वयं ही उसके विकृत सिद्धान्तों में न फंस जाए।' यह उसके भीतर चलने वाला द्वन्द्व है जो अनजाने ही प्रकट भी हो गया। इसी प्रकार जब वह प्रेम में वासना के स्थान के बारे में सोचता है, तब भी उसके अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण लेखक के सफल मनोविश्लेषण कर्त्ता होने का परिचय देता है। चित्रलेखा कुमारगिरि के पास जाने के लिए बीजगुप्त की खातिर त्याग करने का बहाना बनाती है, दो-दो आत्मिक-संबंधों की बात को तर्कपूर्वक प्रमाणित करती है, प्रेम को अस्थिर साबित करती है- यह सब उसकी अचेतन-मन की इच्छाओं की ही अभिव्यक्ति है। चित्रलेखा व कुमारगिरि एक-दूसरे के प्रति आषित होने पर भी इसे सहज स्वीकार नहीं करते। यह कामाकर्षण दोनों के अहं-भाव के रूप में प्रकट होता है। चित्रलेखा का अहं उसकी हीन-भावना उसके वैधव्य और समाज-तिरस्कृत जीवन का ही परिणाम है।12

लेखक ने जीवंत-पात्रों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक-गुत्थियों को पाठक के सामने खा है, मात्र मनोवैज्ञानिक-सिद्धान्तों की विवेचना नहीं की। बीजगुप्त में कृष्णादित्य - परछाईं जानकर नाचती हुई चित्रलेखा का मुख श्वेत हो जाता है। 'सामने बैठे समुदाय को भूलकर वह बीजगुप्त की ओर देखने लगती है" जिस प्रकार व्यक्ति अतृप्त वासनाएं स्वप्न में प्रकट होती हैं, उसी भांति कभी-कभी जाग्रत अवस्था में भी व्यक्ति को स्वप्नवत् निराधार-भ्रांति होती है; जिसे कुछ समय के लिए वह या माग बैठता है। कुछ वैसा ही चित्रलेखा के साथ घटित होते हुए दिखाया गया है।एकाध स्थल पर चरित्र-त्रिषण बाधकता विश्लेषण प्रणाली का आभास कराता है, जिसमें पात्रों की दुखद स्मृतियों, छिपी इच्छाओं रहस्यों आदि को इस भांति कुरेदा जाता है कि वह उसके अन्तर्मानस के द्वन्द्र की चेतन में लाकर अभिव्यक्त कर दे। "प्रेम के क्या अर्थ होते हैं ?" विषय पर कुमारणिरि एवं चिषलेखा के प्रश्नोत्तर इसके उदाहरण है। कुमारगिरि चित्रलेखा

द्वारा दी गई प्रेम विषयक परिभाषा को ही नए रूप में प्रस्तुत करते हुए कहता है "आज मैंने नई बात सोची है विराग मनुष्य के लिए असंभव है जब कोई कहता है वह विरागी है, गलत कहता है, उसका संसार के प्रति विराग है पर साथ ही किसी के प्रति अनुराग अवश्य है और उसके अनुराग का केन्द्र है ब्रह्म" यहां कुमारगिरि के अन्तर्मन में छिपी चित्रलेखा को पाने की लालसा उसके चेतन में आकर अभिव्यक्त हो रही है। उसका विराग विषयक सिद्धान्त चित्रलेखा को अपना पाने में बाधक था, आज अपने ही सिद्धांत की पुनर्व्याख्या करके उसे अपनी इच्छानुरूप परिवर्तित कर वह अपनी इच्छापूति के मार्ग में आई बाधा का निराकरण करता है। उपन्यास में अन्यत्र भी इस विधि का प्रयोग चरित्रों के अन्तर्मानस में छिपे रहस्यों को उजागर करने के लिए किया गया है। पात्रों के चरित्रोद्घाटन के लिए संवादों का आश्रय भी लिया गया है। कहीं पात्र के अपने ही कथन उसकी मानसिकता का बोध कराते हैं। कहीं ये दूसरे पात्रों के सामने अपनी प्रतिक्रियाएं अभियक्त करते है और कहीं किसी अन्य पात्र के विषय में अपनी राय प्रकट करते हैं। बीजगुप्त के स्वगत कथन उसके नियतिवादी दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक प्रस्तुत करते हैं।

लेखक ने ऐसे प्रसंगों की उभावना भी की है जहां पात्र दूसरे पात्रों के समक्ष अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें। राजसभा में कुमारगिरि द्वारा दिखाये चमत्कार के अवसर पर चित्रलेखा कहती है, "योगी! ठहरो, मेरे भ्रम का निवारण अभी नहीं हुआ।"12 योगी के असत्य को उद्घाटित करने का यह पूर्ण प्रसंग पात्रों की क्रिया-प्रति-क्रिया पर आधारित है। इससे चित्रलेखा एवं कुमारगिरि दोनों के चरित्र की अभि-व्यक्ति हुई है।दो पात्रों के वार्तालाप के माध्यम से भी तीसरे का चरित्रोद्घाटन कराया गया है। यशोधरा श्वेतांक से बीजगुप्त एवं चित्रलेखा के बारे में राय पूछती है।
कहीं पात्र स्वयं दूसरे पात्र को तीसरे के विषय में सूचना देते हुए अपनी राय प्रकट करते हैं। कुमारगिरि एवं मृत्युंजय का चित्रलेखा से सम्बन्धित वार्तालाप; बीज-गुप्त एवं चित्रलेखा की चारित्रिक विशिष्टताओं को उद्घाटित करने साथ-साथ उनके भावी आचरण का पूर्वाभास भी कराता है। श्वेतांक के अनुसार बीजगुप्त 'संसार के सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों में गणनीय है। चित्रलेखा एवं मृत्युंजय के अनुसार वह 'मनुष्य नहीं देवता है।' इस प्रकार एकाधिक पात्रों के निष्पक्ष विचार जब किसी पात्र के स्वभाव विशेष की ओर इंगित करें तथा घटनाएं भी उसी का समर्थन करें तो पाठक को ऐसे पात्रों के बारे में अपनी राय बना लेने में आसानी रहती है। किन्तु पात्रों की ऐसी टिप्पणियां कहीं-कहीं पूर्वाग्रह प्रेरित भी हैं। बीजगुप्त की प्रशंसा करने वाला श्वेतांक, यशोधरा के समक्ष उसकी कटु आलोचना करता है। उसका ईष्र्याजनित दृष्टिकोण स्पर्धायुक्त होने के कारण निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता । पात्रों की तात्कालिक मनःस्थिति की व्यंजना करने के लिए लेखक ने असाधारण स्थितियों का निर्माण भी किया है। चित्रलेखा बीजगुप्त एवं यशोधरा के विवाह की झूठी खबर सुनकर क्रोध में आकर कुमारगिरि को शरीर सौंप देती है। बीजगुप्त भी चित्रलेखा के चले जाने पर घोर निराशा का अनुभव करने पर यशोधरा से विवाह करने का निश्चय कर लेता है। वर्मा जी ने चरित्र-चित्रण की तुलनात्मक विधि का आश्रय भी लिया है। उन्होंने उपन्यास के उद्देश्य के अनुकूल योगी कुमारगिरि एवं भोगी बीजगुप्त के विरोधी चरित्रों को नाट्यात्मक-शैली में उद्घाटित किया है। बीजगुप्त द्वारा कुमारगिरि एवं चित्रलेखा तथा मृत्युंजय एवं कुमारगिरि के चिन्तन द्वारा यशोधरा एवं चित्रलेखा की चारित्रिक विशिष्टताओं का तुलनात्मक विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है। कुमारगिरि द्वारा की गई इस तुलना द्वारा लेखक ने कुमारगिरि की तात्कालिक मनःस्थिति की व्यंजना भी कराई है; चित्रलेखा के प्रति तीव्रता से उत्पन्न होने वाले उसके आकर्षण का पूर्वाभास कराया है।

वर्मा जी ने चरित्र के प्रस्तुतिकरण में एकाध स्थल पर सांकेतिक-शिल्प का प्रयोग भी किया है। बीजगुप्त द्वारा प्रस्तुत व्यक्ति एवं समुदाय विषयक तर्क सुनकर चित्रलेखा का यह कहना - "यदि व्यक्ति समुदाय का भाग है, तो नहीं" इस ओर संकेत कर जाता है कि चित्रलेखा का दृष्टिकोण परिवर्तित हो रहा है। हालांकि लेखक ने इसका कथन नहीं किया। बीजगुप्त के अहम् का आभास भी केवल सांकेतिक-शिल्प द्वारा दिया गया है। कुटी में पहुंचकर वह चित्रलेखा से कहता है-थोड़े दिनों बाद ही तुमको यह स्पष्ट हो जाएगा कि तुम गलती कर रही हो। इस कथन से उसकी दृढ़ता के साथ-साथ उसके अहम् का भी संकेत मिलता है। जब यशोधरा उससे दुखी होने का कारण पूछती है तो वह अत्यन्त चतुराई से साफ इन्कार कर देता है- "कारण मैं तुम्हें इसलिये नहीं बतलाना चाहता था कि अपने दुःख से दूसरों को दुःखी करना अनुचित है। अप्रकट रूप से यहां भी उसका अहम् उसे यशोधरा के समक्ष यह स्वीकारने से रोकता है कि चित्रलेखा उसे छोड़कर चली गई है, इस कारण वह खिन्न है। इसीप्रकार अन्य स्थलों पर भी पात्रों के मनोद्गारों की सांकेतिक अभिव्यंजना की गई है। समग्रतः यह कहा जा सकता है कि वर्मा जी ने चरित्रांकन की नाटकीय-विधि के साथ-साथ वर्णनात्मक-विधि का भी कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। "13न केवल चित्रलेखा का चरित्र अपनी समस्त जटिलताओं में उभर पाया है, बल्कि बीजगुप्त, कुमारगिरि, श्वेतांक आदि का चरित्र-चित्रण भी इतना ही प्रभावशाली

बन पड़ा है क्योंकि उपन्यासकार उन्हें घटनाओं और परिस्थितियों के ऐसे उत्कट संघर्ष में डालकर चित्रित करता है कि हर पात्र के लिए अपने आपको ऐसे प्रश्नों के संदर्भ में स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है जिनका सम्बन्ध मनुष्यता के व्यापक परिवेश में उनकी सामा-जिकता, संस्कृति, धर्म और सभ्यता से है।"पात्रों के चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता चरित्रांकन सम्बन्धी पहली शर्त है। इस दृष्टि से 'चित्रलेखा' के सभी पात्र इसी जगत् के प्रतीत होते हैं। इस विषय में लेखक का अपना मत द्रष्टव्य है- "मेरे सभी उपन्यासों के पात्र मेरी कल्पना की उपज हैं लेकिन ये सभी हमारे जीवन में प्रतिदिन मिलने वाले व्यक्तियों में से ही हैं।" 'चित्रलेखा' के पात्र विशिष्ट प्रतीत होते हैं तथा लेखक के जीवन-दर्शन के कारण ये अंग्रेजी-उक्ति 'They lead me where they wish' के अनुरूप न होकर, लेखक की इच्छानुसार कार्य करते हैं, किन्तु जीवन में परिस्थितियों के घात-प्रतिघात का सामना करते हुए इनके जीवन में आए उतार-चढ़ाव इन्हें सहज मानव के रूप में सामने लाते हैं। बीजगुप्त को लेखक की सहानुभूति प्राप्त हुई है, इसमें कोई सन्देह नहीं। उसे देवता की तरह चित्रित किया गया है परन्तु यशोधरा को लेकर उत्पन्न दुर्वलता उसके की तरकानव होने की प्रतीति कराती रहती है। सर्वस्व त्याग के पश्चात् भी चित्रलेखा सामाह करना तथा अपने जीवन की असफलता के विषय में विचार व्यक्त करना उसक से भर होने का ही बाभास कराता है। विवलेवा को भी इस भांति चित्रित किया गया है कि पाठक के मन में कहीं भी उसके प्रति घृणा का भाव नहीं उपजता । हां, यशोधरा का चित्रण अवश्य इस प्रकार किया गया है, मानो उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। श्वेतांक के प्रेम-निवेदन पर वह प्रेम को समझ पाने में असमर्थ है, जोकि अस्वा-भाविक प्रतीत होता है। कुमारगिरि की दुर्बलता से परिचित होने के बावजूद विशालदेव भाविकी गई उसको प्रशंसा विशालदेव के चरित्र को अस्वाभाविक बना देती है। कुमारगिरि के चित्रण के विषय में भी आलोचकों को आपत्ति है। उनकी दृष्टि में कुमारगिरि का स्वरूप कुछ द्वेष-भाव से दिखाया गया है। डा० बेचन ने इसका विशव विवेचन प्रस्तुत किया है। उनका मत है कि कुमारगिरि के चारित्रिक-विकास में लेखक ने स्वाभाविक-गति से कार्य नहीं लिया है उसके पतन का सम्पूर्ण कथा में वर्णन किया गया है लेकिन उसके मानसिक-संताप और द्वन्द्व का उत्थान करने के लिए उसके पीड़ा-मय प्रयास का कोई उल्लेख नहीं किया गया है उसके चरित्र के साथ हुए अन्याय का एकमात्र कारण यही है कि कथाकार ने उसे एक कसौटी पर कसा है और बीजगुप्त को दूसरी पर। वही सिद्धान्त और मर्यादाएं जब कुमारगिरि रखता है तो उसे थोथी दलील और तर्कशक्ति कहा जाता है, वही बातें जब बीजगुप्त कहता है तो उनमें ऐसा स्वर भर दिया जाता है जैसे निरभ्र आकाश में आकाशवाणी हो रही हो।"। इसमें संदेह नहीं क जितनी सहानुभूति बीजगुप्त को प्राप्त हुई है उतनी कुमारगिरि को नहीं, किन्तु इसका कारण वर्मा जी का भोगवादी दर्शन है जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने बीजगुप्त के माध्यम की है। यह भी उतना सही है कि कुमारगिरि का स्खलन दिखाकर उन्होंने उसे तिमानव होने से बचा लिया है। उसका पतन अस्वाभाविक एवं असंभावित नहीं है।14

इस प्रकार उपन्यास के सभी पात्र अपनी दुर्वलताओं के कारण यथार्थ के अधिक कट प्रतीत होते हैं। लेखक के नियतिवादी दृष्टिकोण के कारण पात्रों का विकास टी-कहीं अस्वाभाविक भी प्रतीत होता है, किन्तु कुल मिलाकर यह कहना पड़ेगा कि एक चरित्र-चित्रण में अत्यन्त कुशल सिद्ध हुआ है। समस्यामूलक उपन्यासों में प्रायः रोधी पात्रो की योजना से यांत्रिकता आ जाने का खतरा बना रहता है किन्तु लेखक कलाकार भगवतीचरण वर्मा पर दार्शनिक भगवतीचरण वर्मा को हावी होने का बर न देकर अत्यन्त कुशलतापूर्वक ऐसी स्थिति को उत्पन्न होने से रोका है। यह कहना उचित नहीं कि 'चरित्र-चित्रण में प्रौड़ता का अभाव है' अथवा 'कथानक विकास के लिए पात्रों में यांत्रिकता लाई गई है' अपितु विचित्र, असामान्य एवं जटिल-पात्रों के चरित्र को भी विश्वसनीय बनाकर प्रस्तुत करने के कारण लेखकीय कौशल की सराहना की जानी चाहिए । इसमें संदेह नहीं कि प्रभावोत्पादकता, स्पन्दनशीलता, विश्वसनीयता एवं जीवन्तता आदि विशेषताएं लिए हुए वर्मा जी का चरित्रगत-शिल्प 'विश्लेखा' को चरित्र-चित्रण की दृष्टि से एक सफल उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची.

1. पृ० 708, "हार्डी के सभी पात्र-पात्री नियति के क्रीड़ा-कंदुक हैं।" - शचीरानी गुर्ट, 'साहित्य दर्शन', गौतम बुक डिपो, दिल्ली 1950
2. पृ० 380 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास', -बच्चन सिहं ,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद , प्रथम संस्करण सन् 1978.
3. पृ० 177, गंगा प्रसाद पांडेय, 'आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य,' भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, दसवां संस्करण सं० 2019 वि०
4. पृ० 272 , 'हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद,'-डॉ.त्रिभुवन सिहं , हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय , वाराणसी , तृतीय संस्करण , सं .2018 वि.
5. पृ० 24 'हिन्दी उपन्यासऔर यथार्थवाद,'-डॉ.त्रिभुवन सिहं , हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय , वाराणसी , तृतीय संस्करण , सं .2018 वि.

6. पृ० 37-38,चित्रलेखा चित्रलेखा-भगवतीचरण वर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19, 25वाँ संस्करण , 1986 ई.च्वचर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19 ,25वाँ संस्करण , 1986 ई.
8. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन' पृ० 402, राजपाल एंड संस, दिल्ली 6, प्रथम संस्करण 1962
9 पृ० 87, चित्रलेखा-भगवतीचरण वर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19, 25वाँ संस्करण , 1986 ई.
10. पृ० 123-24-25; 131, 164; 144; 40; 92; 80-81,चित्रलेखा-भगवतीचरण वर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19, 25वाँ संस्करण , 1986 ई.
11 . पृ० 110-111, 53, 74, 12चित्रलेखा-भगवतीचरण वर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19, 25वाँ संस्करण , 1986 ई.
12 . पृ० 145, 161चित्रलेखा-भगवतीचरण वर्मा ,भारती भंडार,लीडर भवन,इलाहाबाद,ग्रंथ संख्या 19, 25वाँ संस्करण , 1986 ई.
13- .पृ० 197, प्रताप नारायण टंडन, 'हिन्दी उपन्यास कला', भार्गव भूषण प्रैस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1965
14..पृ० 232-33-34 "आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास,' सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली 6, प्रथम संस्करण' 1965